केले का भोज-3

“मैंने योनि के छेद पर उंगली फिराई। थोड़ा-सा गूदा घिसकर उसमें जमा हो गया था। ‘तुम्हें भी केले का स्वाद लग गया है !’ मैंने उससे हँसी की। मैंने उस जमे गूदे को उंगली से योनि के अन्दर ठेल दिया। थोड़ी सी जो उंगली पर लगी थी उसको उठाकर मुँह में चख भी लिया। एक […] ...”

Story By: (happy123soul)
Posted: Wednesday, February 3rd, 2010
Categories: जवान लड़की
Online version: केले का भोज-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

केले का भोज-3

मैंने योनि के छेद पर उंगली फिराई। थोड़ा-सा गूदा घिसकर उसमें जमा हो गया था। 'तुम्हें भी केले का स्वाद लग गया है !' मैंने उससे हँसी की।

मैंने उस जमे गूदे को उंगली से योनि के अन्दर ठेल दिया। थोड़ी सी जो उंगली पर लगी थी उसको उठाकर मुँह में चख भी लिया। एक क्षण को हिचक हुई, लेकिन सोचा नहा-धोकर साफ तो हूँ। वही परिचित मीठा, थोड़ा कसैला स्वाद, लेकिन उसके साथ मिली एक और गंध- योनि के अन्दर की मुसाई गंध।

मैंने केले को उठाकर देखा, छिलके के अन्दर मुँह घिस गया था। मैंने छिलका अलग कर फिर से गूदे में नाखून से खोद दिया। देखकर मन में एक मौज-सी आई और मैंने योनि में उंगली घुसाकर कई बार कसकर रगड़ दिया।

उस घर्षण ने मुझे थरथरा दिया और बदन में बिजली की लहरें दौड़ गईं। हूबहू मोटे लिंग-से दिखते उस केले के मुँह को मैंने पुचकार कर चूम लिया।

और उसी क्षण लगा, मन से सारी चिंता निकल गई है, कोई डर या संकोच नहीं।

मैंने बेफिक्र होकर केले को योनि के मुँह पर लगा दिया और उसे रगड़ने लगी। दूसरे हाथ की तर्जनी अपने आप भगांकुर पर घूमने लगी। आनन्द की लहरों में नौका बहने लगी, साँसें तेज होने लगीं। मैंने खुद अपने यौवन कपोतों को तेज तेज उठते बैठते देख मैंने उन्हें एक बार मसल दिया।

मेरा छिद्र एक बड़े घूमते भँवर की तरह केले को अदंर लेने की कोशिश कर रहा था। मैंने केले को थपथपाया- अब और इंतजार की जरूरत नहीं। जाओ ऐश करो।'

मैंने उसे अन्दर दबा दिया। उसका मुँह द्वार को फैलाकर अन्दर उतरने लगा। डर लगा, लेकिन दबाव बनाए रही। उतरते हुए केले के साथ हल्का सा दर्द होने लगा था लेकिन यह दर्द उस मजे में मिलकर उसे और स्वादिष्ट बना रहा था। दर्द ज्यादा लगता तो केले को थोड़ा ऊपर लाती और फिर उसे वापस अन्दर ठेल देती।

धीरे धीरे मुझमें विश्वास आने लगा- कर लूँगी।

जब केला कुछ आश्वस्त होने लायक अन्दर घुस गया तब मैं रुकी, केले का छिलका योनि के ऊपर पत्ते की तरह फैला हुआ था। मेरी देह पसीने-पसीने हो रही थी।

अब और अन्दर नहीं लूँगी, मैंने सोचा। लेकिन पहली बार का रोमांच और योनि का प्रथम फैलाव उतने कम प्रवेश से मानना नहीं चाह रहे थे।

थोड़ा-सा और अन्दर जा सकता है !

अगर ज्यादा अन्दर चला गया तो ?

मैं उतने ही पर संतोष करके केले को पिस्टन की तरह चलाने लगी।

आधे अधूरे कौर से मुँह नही भरता, उल्टे चिढ़ होती है। मैंने सोचा, थोड़ा सा और... !

सुरक्षित रखते हुए मैंने गहराई बढ़ाई और फिर उतने ही तक से अन्दर बाहर करने लगी। ऊपर बायाँ हाथ लगातार भग-मर्दन कर रहा था। शरीर में दौड़ते करंट की तीव्रता और बढ़ गई। पहले कभी इस तरह से किया नहीं था। केवल उंगली अन्दर डाली थी, उसमें वो संतोष नहीं हुआ था।

अब समझ में आ रहा था औरत के शरीर की खूबी क्या होती है, नेहा क्यों इसके पीछे पागल रहती है। जब केले से इतना अच्छा लग रहा था तो वास्तविक सम्भोग कितना

अच्छा लगता होगा !?!

मेरे चेहरे पर खुशी थी। पहली बार यह चिकना-चिकना घर्षण एक नया ही एहसास था, उंगली की रगड़ से अलग, बेकार ही मैं इससे डर रही थी।

मुझे केले के भाग्य से ईर्ष्या होने लगी थी, केला निश्चिंत अन्दर-बाहर हो रहा था। अब उसे योनि से बिछड़ने का डर नहीं था। मैं उसके आवागमन का मजा ले रही थी। केले के बाहर निकलते समय योनि भिंचकर अन्दर खींचने की कोशिश करती। मैं योनि को ढीला कर उसे पुन : अन्दर ठेलती। इन दो विरोधी कोशिशों के बीच केला आराम से आनन्द के झोंके लगा रहा था। मैं धीरे-धीरे सावधानी से उसे थोड़ा थोड़ा और अन्दर उतार रही थी। आनन्द की लहरें ऊँची होती जा रही थीं, भगांकुर पर उंगलियों की हरकत बढ़ रही थी, सनसनाहट बढ़ रही थी और अब किसी अंजाम तक पहुँचने की इच्छा सर उठाने लगी थी।

बहुत अच्छा लग रहा था। जी करता था केले को चूम लूँ। एक बार उसे निकालकर चूम भी लिया और पुन : छेद पर लगा दिया। अन्दर जाते ही शांति मिली। योनि जोर जोर से भिंच रही थी। मैंने अपने कमर की उचक भी महसूस की।

धीरे धीरे करके मैंने आधे से भी अधिक अन्दर उतार दिया। डर लग रहा था, कहीं टूट न जाए। हालाँकि केले में पर्याप्त सख्ती थी। मैं उसे ठीक से पकड़े थी। योनि भिंच-भिंचकर उसे और अन्दर खींचना चाह रही थी। केला भी जैसे पूरा अन्दर जाने के लिए जोर लगा रहा था। मैं भरसक नियंत्रण रखते ही अन्दर बाहर करने की गति बढ़ा रही थी। योनि की कसी चिकनी दीवारों पर आगे पीछे सरकता केला बड़ा ही सुखद अनुभव दे रहा था।

कितना अच्छा लग रहा था !!एक अलग दुनिया में खो रही थी मैं !एक लय में मेरा हाथ और सांसें और धड़कनें चल रही थीं, तीनों धीरे धीरे तेज हो रहे थे। मैं धरती से मानो ऊपर उठ रही थी। वातावरण में मेरी आह आह की फुसफुसाहटों का संगीत गूंज रहा था। कोई

मीठी सी धुन दिमाग में बज रही थी…

‘आज मदहोश हुआ जाए रे मेरा मन, मेरा मन

शरारत करने को ललचाए रे मेरा मन, मेरा मन…

धीरे धीरे दाहिने हाथ ने स्वत : ही अन्दर-बाहर करने की गति सम्हाल ली। मैं नियंत्रण छोड़कर उसके उसके बहाव में बहने लगी। मैंने बाएँ हाथ से अपने स्तनों को मसलना शुरू कर दिया। उसकी नोकों पर नाइटी के ऊपर से ही उंगलियाँ गड़ाने, उन्हें चुटकी में पकड़कर दबाने की कोशिश करने लगी। योनि में कम्पन सा महसूस होने लगा। गति निरंतर बढ़ रही थी – अन्दर-बाहर, अन्दर-बाहर… सनसनी की ऊँची होती तरंगें… ‘चट’ ‘चट’ की उत्तेजक आवाज… सुखद घर्षण.. भगनासा पर चोट से उत्पन्न बिजली की लहरें… चरम बिन्दु का क्षितिज कहीं पास दिख रहा था। मैंने उस तक पहुँचने के लिए और जोर लगा दिया…
कोई लहर आ रही है… कोई मुझे बाँहों में कस ले, मुझे चूर दे… ओह…
कि तभी ‘खट : खट : खट’…

मेरी साँस रुक गई। योनि एकदम से भिंची, झटके से हाथ खींच लिया…
खट खट खट…
हाथ में केवल डंठल और छिलका था।
कहानी जारी रहेगी।
happy123soul@yahoo.com
2384

Other stories you may be interested in

बॉयज होस्टल में गर्लफ्रैंड का प्यार

दोस्तो, मैं बैडमैन आप लोगों के सामने फिर से एक बार अपनी कहानी लेकर पेश हुआ हूँ। मेरी पिछली कहानी थी गर्लफ्रेंड की सहेली की प्यासी चूत और गांड मेरी कहानियां कोई सीरियल से नहीं है, कोई आगे पीछे चल […]
Full Story >>>

पहली बार लंड चूसने का मजा

मेरे प्यारे दोस्तो, आप सभी को मेरा प्यार भरा नमस्कार. सबसे पहले मैं अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज साईट को धन्यवाद करना चाहता हूँ जिसने हमें अपनी एडल्ट कहानी शेयर करने के लिए अवसर और स्थान दिया. मेरा नाम मोहित है. मेरी […]
Full Story >>>

दोस्त की गांड मारी : मेरी गे सेक्स स्टोरी-1

हैलो दोस्तो.. मैं एक बार फिर से हाज़िर हूँ अपनी गे सेक्स स्टोरीज के साथ ! आशा करता हूँ आपको मजा आएगा। मेरी पिछली कहानी मेरी गांड चुदाई की शुरूआत : गे सेक्स स्टोरी पहली बार मेरी गांड की चुदाई की […]
Full Story >>>

मेरी कमसिन चूत और लेस्बीयन लड़कियाँ हॉस्टल में-2

मेरी कमसिन चूत और लेस्बीयन लड़कियाँ हॉस्टल में-1 अब तक आपने मेरी इस सेक्स स्टोरी में पढ़ा था कि मैं एक गर्ल्स होस्टल में पहली बार गई थी और ऊषा दीदी ने मेरी छोटी छोटी चुची चूस कर मुझे लेस्बीयन […]
Full Story >>>

मेरी गांड चुदाई की शुरूआत : गे सेक्स स्टोरी

दोस्तो, मेरी गांड चुदाई की जे सेक्स स्टोरी में आप सभी का स्वागत है। मेरा नाम राज है.. मेरी उम्र 22 साल की है। मेरे लंड का साइज 7 इंच का है.. जो किसी भी महिला के हर छेद के […]
Full Story >>>